भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-9, अंक : 8	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
सोमवार, 11 अग.' 86	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी

पिछले प्रसंगों में हमने पढ़ा कि मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को अखंड-सर्वत्र महाराज का ही दर्शन था... महाराज की मूर्ति ही उनका जीवनप्राण थी। एक पल भी वह महाराज की मूर्ति को अपनी आँखों के सामने से-अपने अंतर से ओझल नहीं होने देते थे। एक बार महाराज ने स्वयं कहा था, 'अरे ! स्वामी अब तो जाने की मंजुरी दो।' और कहा था—'इस साधु ने तीनों अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति) में मेरी मूर्ति को अखंड पकड़ रखा है।'

सूरत में सद्. मुक्तानंदस्वामी के मंडल में मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को महाराज ने रखे थे। जहाँ साधुओं के रहने की व्यवस्था थी उस हवेली के सामने एक नीला बन्दर रहता था। एक बार सद्. मुक्तानंदस्वामी ने सभा में संयम व नियम की खूब बातें करते हुए संतों को पूछाः देखो, अपनी आंख, नाक, कान कितने चंचल है? हमें पता भी नहीं चलता कि वह सूक्ष्मरूप से किस प्रकार हमसे छलावा कर जाती है—या कब हम उनसे धोखा खा जाते हैं? फिर बोलेः देखो, सामने की हवेली में एक नीला बन्दर रहता है, उसके ऊपर अभी तक जिसकी दृष्टि न गई हो वह खड़े हो जाओ, पर मुझे पक्का विश्वास है कि हम जब से यहां आये तब से आज तक में कोई भी वह बन्दर देखे बिना रहा नहीं होगा।' सद्. मुक्तानन्दस्वामी की यह बात सुनकर दो सौ साधुओं की सभा स्तब्ध रह गई। कोई खड़ा नहीं हुआ। सभा में सबसे पीछे बैठे 'स्वामी' हाथ में माला फेरते हुए नीची दृष्टि रखकर खड़े हुए। सद्. मुक्तानंदस्वामी तो स्वामी को खड़े हुए देखकर आश्चर्यचकित रह गये। साथ-साथ उन्हें आनन्द भी हुआ। उन्होंने कहाः शाबाश, साधुराम ! तुम्हें धन्य है। दो सौ साधुओं में ऐसी संयम वृत्ति वाले तो तुम एक ही निकले।' इतना कहकर फिर दुबारा बोलेः इस रीत से चंचल दृष्टि को नियम में रखना, वह तो अत्यंत कठिन है।

परन्तु जिसे **महाराज की यथार्थ महिमा और आज्ञा पर केवल निगाह हो, वह ही ऐसी स्थिरता और संयम रख सकता है।'** सद्. मुक्तानन्दस्वामी बोलेः अरे ! एक बार तो मेरी दृष्टि भी उस बंदर पर पड़ गई है।

ऐसा कहकर सद्. मुक्तानन्दस्वामी उठे और गुणातीतानन्दस्वामी के सिर पर हाथ रख कर उन्हें धन्यवाद दिया। सद्. मुक्तानंदस्वामी को अपने भीतर से ऐसा विचार आया कि इस साधु की महिमा हमें ठीक से समझाने ही महाराज ऐसे प्रसंग खड़े करते हैं।

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को ऐसा जीवन जीने की कोई आवश्यकता नहीं थी, वह तो स्वयं 'अक्षरब्रह्म' का मूर्तिमान स्वरूप थे। पर हम सभी के लिए स्वयं इस ढंग से जिये और हमारे लिये आदर्श रूप में निराली विरासत छोड़ गये.....अक्षर के उस अनादि स्वरूप को हमारे कोटि-कोटि प्रणाम !

★ ★ ★

1 सितम्बर
प.पू. पप्पाजी महाराज का प्राकट्यदिन

समस्त गुणातीतसमाज प.पू. पप्पाजी से भली भांति परिचित है। चित्त को हरती, श्वेत वस्त्रों में पवित्रता, निर्दोषता, गंभीरता, स्थिरता, सहजता, करुणा व ममता की सजीव सौम्य मूर्ति....संबंध में आये हरेक को प्रभु की मूर्ति मौज में बक्षीश देने वाले निर्दोष साकारस्वरूप गुणातीत विरासत के वारिसदार प.पू. पप्पाजी को कोटि-कोटि वंदन.....

1916 की 1 सितंबर के महामंगलकारी दिन मानव चेतना का परम कल्याण करे इस दिव्य कल्यणकारी विभूति का गुजरात के बोरसद गांव में प्राकट्य हुआ। बचपन में भी अत्यंत, धीर, शांत, गंभीर प्रकृति-कम बोलने का स्वभाव-खूब शिस्तबद्ध, हिमालय की तरह स्वधर्मयुक्त, अडिग, नियमित जीवन.... कही भी बनावट नहीं..... सात्त्विक भाव में अखंड निमग्न रहकर क्षण-क्षण की स्वाभाविक क्रिया....

प.पू. पप्पाजी जैसी प्रभु रखी दिव्य मूर्ति के गुणों के बारे लिखना अर्थात् चिदाकाश को स्वसाधन से नापना....अत्यंत गहरा जीवन..... उनके व्यावहारिक जीवन और आध्यात्मिक जीवन की गहराई को सहज में समझना अत्यंत कठिन है। प.पू. पप्पाजी ने एक अनोखे नवीन प्रयोग की शुरूआत की कि जगत को ठुकराकर दिव्यता प्राप्त नहीं करनी, परन्तु जगत में ही रहकर पार्थिव जीवन का स्वीकार करके प्रत्येक कार्य में दिव्यता प्रगट करनी है। इससे भी अधिक हमारे साथ, हमारी ही कक्षा पर आकर वह जीवन जीते है। गुरुहरि योगीजी महाराज के स्वरूप की सम्यक् पहचान होने के बाद उनकी योजना में अपना सर्वस्व याहोम कर दिया। 1952 के वर्ष में गुरुहरि योगीजी महाराज ने कहा 'बहनों भगवान भजे तो क्या हर्जा? महाराज जोग दे देंगे।' अपने गुरु का यह वचन प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी ने अध्धर झेला ही नहीं, बल्कि विषम परिस्थितियों में भी अपने

अनथक् परिश्रम से आज सर्वत्र प्रभु की ही सुगन्ध फैलाती भव्य गुणातीत फुलवाड़ी तैयार कर दी.....! संतों, भगवाधारी परम भागवत संत-बहनों, युवकों, गृहस्थों-चार पंखुड़ियों का निराला, अद्‌भुत पूर्ण विकसित कमल आज हम सभी के सामने हैं। छोटी नदियों का स्वरूप जब ऐसा है, तो उन्हें बनाने वाले पूर्णता के अमाप अस्खलित सागर का स्वरूप कैसा भव्य होगा? वह कल्पना करना ही कठिन है।

प.पू. पप्पाजी स्वयं प्रभु की मूर्ति के धारक बनें और दूसरों को प्रभु बांटने गुणातीत पीढ़ी के वारिसदार बनें....आज 72 वर्ष की आयु में भी देह भाव से सम्पूर्णतया परे रह कर देश-विदेश में प.पू. पप्पाजी का विचरण सतत चालू ही है। हरेक को ब्रह्मप्रवाह में झबो कर अक्षरधाम का सुख, शांति, आनन्द देने की ही एकमात्र चाहना.....कोई स्वार्थ नहीं, सर्वदा उपेक्षा और अपेक्षारहित निष्काम जीवन.....स्वयं की न कोई अस्मिता न ही कोई अस्तित्व.....प्रथम दर्शन में ही जीव को अपनी मूर्ति में खींचकर अन्तःकरण में बैठ जाने की अनोखी ताकत.....

अनन्त ब्रह्मांडों के मालिक को कुछ भेंट देने की अपनी सामर्थ्य कहां? केवल प्रार्थना.....

हे पप्पाजी ! आप निर्दोषता के साकार स्वरूप हो। आपने इस धरती पर मानवरूप में आकर हम सभी को अपना आश्रय दिया.....हमारे जड़ स्वभाव प्रकृति होते हुए भी स्वीकारा वह ही हमारा और इस धरती का परम सौभाग्य है.....आप आपका स्वास्थ्य खूब स्वस्थ रखें और आपकी प्रत्यक्ष मूर्ति के दर्शन, सेवा, समागम खूब वर्षों तक देते रहो यही आपके-प्रभु के चरणों में इस महामंगलकारी अवसर पर अन्तर की सर्वप्रथम चाहना....दूसरा, आपको पहचान पायें ऐसे अन्तर में दिव्य चक्षु दे देना। आपके द्वारा दिया संजीवनी मन्त्र–

'हे महाराज ! हे स्वामी ! हे साक्षात् स्वरूपों ! मेरे सामने आने वाले हरेक को जीवनमुक्त मानकर दिव्य भाव पकड़ रखकर स्वधर्मयुक्त माहात्म्यसभर सेवा कर लेने की मुझे जाग्रतता-सतर्कता देना।'

यह आपने अपने जीवन में साकार किया है वह समग्र गुणातीत समाज का जीवन-प्राण बने–यही प्रार्थना है।

प.पू. काकाजी जैसी दिव्यविभूति को अपने जड़ मन, स्वभाव के कारण खोने के बाद अब तो मेरा-तेरा, अपना-पराया, अहंता-ममता, मन-बुद्धि चित्त की हरेक भूमिका को total ठुकरा कर प्रत्यक्ष गणातीतस्वरूपों की योजना में हम अपना सर्वस्व सौंप कर निमित्त बनें और 'मैं प्रभु का प्रकाश' बस यही भावना....जहाँ किसी का अभाव नहीं और प्रत्यक्ष स्वरूपों को जंचता ही करना–यही हमारा जीवन लक्ष्य बने.....यही आरजु है। आपका संकल्प है कि संबंध में आये हरेक मुक्त की देह और घर मन्दिर बने यही आपके प्राकट्य दिन के महामंगलकारी खूब पवित्र पर्व पर अन्तर की अभीप्सा।

★ ★ ★

ब्रह्मप्रवाह.....

'इस रीत से अनुशासन में ही रहो'–ऐसा

प.पू. काकाजी ने सेवकों से कभी आग्रह रखा नहीं। कभी किसी ने भी उन्हें ऐसा आग्रह रखते नहीं देखा होगा–इस बारे सहज सूचन करते हुए भी कभी किसी ने नहीं देखे होंगे.....

इसी संबंध में एक बार उन्होंने एक सेवक को कहा कि–

'यह मेरे स्वभाव में ही नहीं है कि मैं तुम्हें कहूं कि तुम ऐसे अनुशासन में रहो। मैं कभी ऐसा कहूँगा भी नहीं। पर, इच्छा रखूँगा कि तुम ऐसे वर्तो।' तब सेवक ने सहज पूछा कि–

जब आप हमें कभी कुछ कहोगे ही नहीं, तो हमें आपकी इच्छा क्या है वह पता ही किस तरह चलेगा? प.प. काकाजी तुरन्त बोले–

'तुम बापा में लीन और लय हो जाओ–वह हो जाओगे तो मेरी इच्छा तुम्हारे में अपने आप उतर आयेगी।'

पू. राजूभाई भट्ट

★ ★ ★

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	16.8.86	शनिवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	19.8.86	मंगलवार	श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन
3.	दि.	27.8.86	बुधवार	जन्माष्टमी, श्रीकृष्णजयंती
4.	दि.	31.8.86	रविवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	1.9.86	सोमवार	प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज की जन्मजयंती
6.	दि.	14.9.86	रविवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P., Printers, shahadra, Delhi-110 032